BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

an abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session – 2019-21

EPC-2

Internal

Assignment

Drama & Arts in Education

Guided by –
MADHU RANJAN

Submitted by –
Name – Nishu Tigga
Roll no – 27

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आभार ज्ञापन

बी0एड की प्रशिक्षु होने के नाते मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे **EPC- II** के Assignment कार्य "Drama & Arts" पर अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रोजेक्ट कार्य को करने के दौरान मुझे इससे संबंधित अनेक जानकारियाँ मिली।

इस प्रोजेक्ट कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षिक **सचिव श्रीमती दीपाली परासर एवं प्रभारी प्राचार्य एवं व्याख्याता राकेश कुमार राय एवं मधु रंजन** ने **विशेष** योगदान दिया, जिसके लिए मैं आप सभी को **विशेष** आभार एंव हार्दिक कृतज्ञता का भाव व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने माता–पिता सभी मित्रों एंव परिजनों को धन्यवाद देती हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मेरे प्रोजेक्ट कार्य में सहयोग प्रदान किये हैं ।

धन्यवाद!

नाम – नीशु तिग्गा

क्रमांक – 27

कक्षा – बी0एड0(प्रथम वर्ष)

सत्र – 2019–21

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

Q.No	Question	Page no	Remarks
1.	कला से आप क्या समझते है? शिक्षण कला के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के बारे में बताएं?	1-14	
2.	'Child Art' से आप क्या समझते है? इसके विभिन्न स्तरों का चित्र सहित वर्णन करे?	15-20	

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

S.No	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1.	[illegible]	1..14	
2.	Wild life ([illegible]) [illegible]	12..20	

Q) कला से आप क्या समझते है? शिक्षा कला के लक्ष्य एंव उद्देश्यों के बारे में बताएं ?

कला

कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमे कौशल अपेक्षित हो। यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है। कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमे शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

कला का अर्थ

कला का पाश्चात्य पर्याय है आर्ट (Art) आर्ट लैटिन भाषा के 'आर्स' (Ars) शब्द से बना है, यह ग्रीक के 'तेक्नेन' (Texven) शब्द का रूपान्तर है। इस शब्द का प्राचीन अर्थ 'शिल्प' (craft) अथवा 'नैपुण्य - विशेष' है। प्राचीन भारतीय मान्यताओं में भी कला के लिए 'शिल्प और कलाकार के लिए 'शिल्पी' शब्द का ही अधिक प्रयोग मिलता है।

पुरातन युग से आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी युग तक कला का महत्व निर्विवाद रूप से अभिव्यक्त करता है। कला में समाज व राष्ट्र के कल्याण की

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भावना सन्निहित होती है। कला के अर्थ को समझने के लिए उसकी सम्भावनाओं को समझना आवश्यक है। कला मानव मस्तिष्क की सबसे ऊँची और प्रखर कल्पना है। कला मानव हृदय में सुखद भाव और अर्थपूर्ण अनुभूतियां उत्पन्न करती है। मानव इन्द्रियों और मन को आनन्द प्रदान करती है। कला मानव के सृजनात्मक वाह्य, मूर्त रूप का संतुलन, अनुपात और सामंजस्य है।

पाश्चात्य परम्परा में कला को पाँच भागों में विभाजित किया जाता है –

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

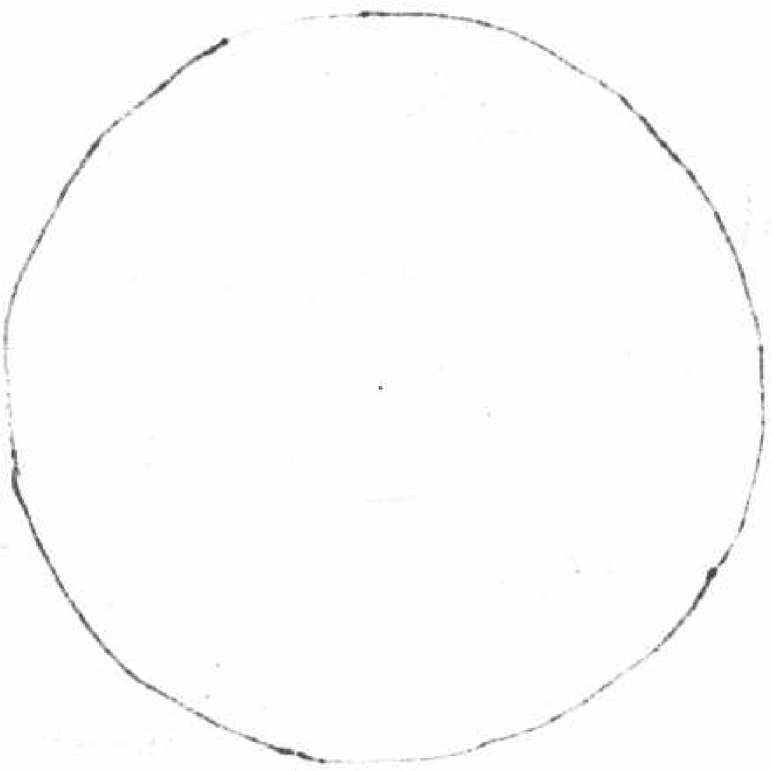

कला के अर्थ को समझने के कुछ विशिष्ट विद्वानों कला को इस प्रकार परिभाषा किया है।

कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार —
"जो सत् है, जो सुन्दर है, वही कला है।"

कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार —
"कला अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति है।"

मनोवैज्ञानिक फ्रायड के अनुसार —
"दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप ही कला है।"

शिक्षाशास्त्री प्लेटो के अनुसार —
"कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।"

शिक्षाशास्त्री अरस्तु के अनुसार —
"कला प्रकृति के सौन्दर्यमय अनुभवों का अनुकरण है।"

भारत में कला को योग साधन माना गया है। कला हमारे विचारों का एक दृश्य रूप है। जिसमें से तीन योग्यताएँ सन्निहित हैं — कल्पनाशक्ति, आदर्शप्रियता और सृजनात्मकता।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कला का क्षेत्र बड़ा व्यापक है और इस क्षेत्र में विभिन्न मतों की भरमार है। संस्कृत भाषा के 'कला' धातु से व्युत्पन्न 'कला' सुन्दरता और मंत्रमुग्धता को व्यक्त करती है। प्राचीन साहित्य में कला के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण मिलता है।

कलाओं का वर्गीकरण

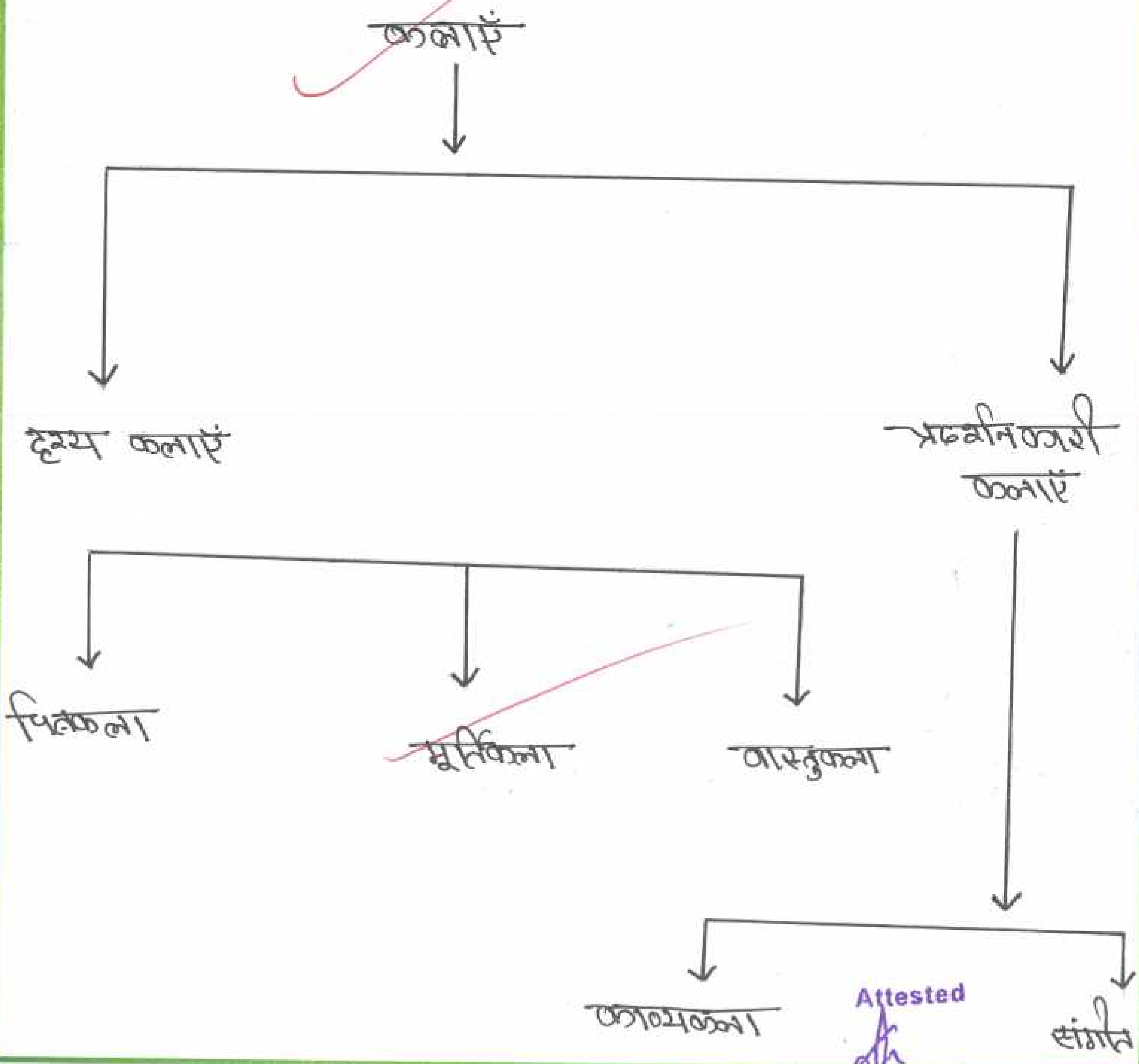

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

H

● चित्रकला – समस्त शिल्पों और कलाओं में प्रधान तथा सर्वप्रिय चित्रकला को माना गया है। यह माना जाता है कि चित्रकला भौतिक, दैविक एंव आध्यात्मिक भावना तथा सत्यम, शिवम और सुन्दरम् की समन्वित रूप की अभिव्यक्ति है। रेखा, वर्ण, वर्तना और अलंकरण इन चारों की सहायता से चित्र का स्वरूप निष्पादित होता है। सामान्य रूप में प्राचीन काल में तीन प्रकार, पट - चित्र और फलक - चित्र। आधुनिक चित्रकला में तैल कला का स्थान प्रमुख है।

● मूर्तिकला – भारत में मूर्तिकला को अत्यन्त प्रतिष्ठित माना जाता है। प्राचीन भारतीय मन्दिरों की मूर्तिकला पर सम्पूर्ण विश्व आश्चर्य करता है और मुग्ध होता है। मन्दिरों में मूर्तिकला का अत्यन्त उदात्त रूप देखने को मिलता है। प्राचीन मूर्ति निर्माण में धार्मिक भावना और आस्था का बाहुल्य रहता था। मूर्तिकला को प्राचीन काल में वास्तुकला के अन्तर्गत ही स्थान प्राप्त था। भारतीय मूर्तिकला के प्रमुख प्रयोजन हैं– धार्मिक, स्मारक और अलंकरण।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

• **वास्तुकला** – भारतीय वास्तुकला के विकास का स्रोत धर्म ही रहा है, मूर्तिकला और चित्रकला के वास्तुकला के अन्तर्गत ही स्थान दिया गया था। प्राचीन गुफाओं, मन्दिरों आदि में तीनों कलाएँ एक साथ मिलती हैं। वास्तुकला का सीधा अर्थ है – "उन भवनों की निर्माण कला जहाँ निवास किया जाता है।" वास्तुकला साधारण रूप में स्थान की कला मानी जाती है। सुनियोजित नगर – निवेश, पक्की ईंटों के बने सार्वजनिक एवं निजी सड़के, जल निकास की नालियाँ, सिन्धु सभ्यता की वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरण है।

• **काव्यकला** – काव्य में सम्प्रेष्य भाव और विचार के साथ कुछ और भी होता है। वही 'कुछ और काव्य की अस्मिता या पहचान है। इस 'कुछ और' को विचारकों ने स्पष्ट करते हुए इसे 'चारुता' या 'सौन्दर्य' कहा 'काव्य - प्रकाश' के रचयिता ने यश की प्राप्ति, सम्पत्ति लाभ, सामाजिक व्यवहार की शिक्षा, रोगादि विपत्तियों का नाश, तुरन्त ही उच्च कोटि के आनन्द का अनुभव और प्रेयसी के

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

समान मधुर उपदेश देने को काव्य का प्रयोजन माना है। पाश्चात्य देशों में काव्य को कला मानते हुए प्रयोजन के सम्बन्ध में विभिन्न मत मिलते हैं, जैसे – कला के लिए, जीवन के लिए, जीवन से पलायन के लिए, जीवन में प्रविष्ट होने के लिए, सेवा के लिए, आत्मानुभूति के लिए, आनन्द के लिए, विनोद के लिए, सर्जन की अदम्य आवश्यकता पूर्ति के लिए आदि।

- **संगीत कला** – संगीत के विविध आयाम हैं – गायन, वादन व नृत्य। गायन के क्षेत्र में तानसेन, बैजू से लेकर पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज के नाम विशेष सम्माननीय हैं। संगीत काव्य की भांति भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। संगीतकार भावों की व्यंजना 'नाद' के माध्यम से करता है। संगीत मानव को ही नहीं पशुओं को भी रस-विभोर कर देता है। भारतीय वैदिक मत संगीत की उत्पत्ति को पंचभूतों से भी प्राचीन मानता है। मानव में निहित चित्त शक्ति ही शब्दों (ध्वनि) के माध्यम से संगीत का रूप ले लेती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

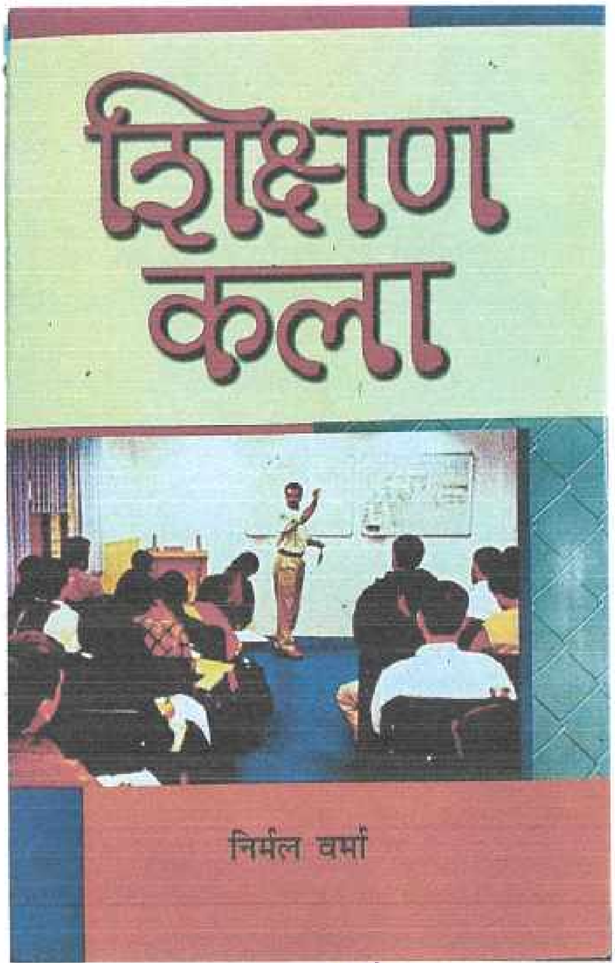

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षण कला

शिक्षण एक कला है वर्तमान समय में एक शिक्षक को आवश्यकता है कि वह किस तरह से शिक्षण को रुचिकर बना सकता है वर्तमान समय शिक्षा पद्धति से ही नहीं वर्ण शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए कक्षा कक्ष में नवीन गतिविधियां और सृजनात्मक कार्यों को स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। सृजनात्मक कार्य बालक के सोचने समझने और brain storming से संबंधित हो तो बालक इस कार्य में रुचि लेता है। शिक्षक के समक्ष यह चुनौती है कि वह कक्षा में ऐसा माहौल कैसे बनाये कि एक छात्र इन कार्यों में रुचि ले सके। और शिक्षण को प्रभावी बना सके।

विद्यालयी शिक्षा का लक्ष्य बालक को ज्ञानवान बनाना ही नहीं, अपितु उसे भविष्य में सामाजिक प्रक्रिया के उत्तरदायित्व को वहन करने के योग्य बनाना भी है।

"शिक्षण" को सामाजिक प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

[illegible]

[illegible] primate mind [illegible]

[illegible]

शिक्षण कला के लक्ष्य —

1) अच्छी रुचियों का विकास
2) आध्यात्मिक विकास
3) सांस्कृतिक विकास
4) चारित्रिक विकास
5) मानसिक / बौद्धिक विकास
6) बालक के व्यक्तित्व को खंडित होने से बचाना
7) संगीतपूर्ण सम्बन्ध विकसित होने मे सहायक
8) आत्मविश्वास की परिपूर्णता

1) अच्छी रुचियों का विकास — शिक्षण कला का लक्ष्य बालक के अन्दर अच्छी रुचियों का विकास करना भी होना चाहिए ताकि वह अपना चारित्रिक उत्थान सही कर सके। बालक को जिस क्षेत्र में अधिक रुचि हो वह उसे पूरा कर सके।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2) आध्यात्मिक विकास – भारतीय संस्कृति सदैव से आध्यात्मिक संस्कृति की श्रेणी में रही है शिक्षण कला की वजह से आज भी आध्यात्म से जुड़े रह पाते है।

3) सांस्कृतिक विकास – भारतीय संस्कृति सदैव से आध्यात्मिक विकास करने और उसे स्थानांतरित कर आगे बढ़ाना शिक्षण से ही संभव हुआ है शिक्षण कला के माध्यम से बालकों को विभिन्न संस्कृतियों से परिचित करवाया जाता है।

4) चारित्रिक विकास – शिक्षण कला के विभिन्न प्रकार का एवं विभिन्न पद्धतियों के कारण बालकों में चारित्रिक विकास होता है क्योंकि शिक्षण के हर खेल में हर रोज कुछ नया सीखने को मिलता ही रहता है।

5) बौद्धिक विकास – मानसिक दृष्टि से परिपक्व व्यक्ति अपनी राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जो शिक्षण के विभिन्न कलाओं द्वारा उसमें विकसित हो जाता है।

6) **बालक के व्यक्तित्व को खंडित होने से बचाना** — शिक्षण कला के मुख्य लक्ष्यों में से एक व्यक्तित्व को खंडित होने से बचाना भी एक मुख्य बिंदु है इसके द्वारा ध्यान रखने की आवश्यकता पड़ती है कि किसी भी बालक का व्यक्तित्व सही दिशा में ही जाए।

7) **संगीतपुर्ण सम्बन्ध विकसित होने मे सहायक** — शिक्षण कला के विभिन्न रूप है जिसके द्वारा बालक में अनेक गुणों एंव रुचियों का विकास होता है संगीत जीवन के कड़वाहट में मीठास भरने का कार्य करती है।

8) **आत्मविश्वास की परिपूर्णता** — शिक्षण कला के जरिये विभिन्न कार्यक्रम एंव कार्य बच्चों को सौंपे जाते है जिसके कारण उनमें आत्मविश्वास की परिपुर्णता देखने को मिलती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षण कला के उद्देश्य

शिक्षण कला का उद्देश्य बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक विकास, सृजनात्मकता व मौलिकता की अभिव्यक्ति और संस्कृति, लोक परंपराओं और कलात्मक धरोहरों के प्रति लगाव पैदा करना है।

- विद्यार्थी अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को चित्र, संगीत, हाव-भाव और शारीरिक गतिविधियों के द्वारा व्यक्त कर सकें।
- विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे उचित भाव-भंगिमा / अभिनय / रेखांकन / गायन / वादन से मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियों को पार कर सकें।
- बालक की आवश्यकता और अभिव्यक्ति के मध्य सन्तुलन स्थापित करना।
- कला के निर्माण, कला को देखने और कला के प्रति प्रतिक्रिया के लिए बालकों को सक्षम बनाना।
- बालक की सौन्दर्यानुभूति का विकास करना।
- कल्पनाशील चिन्तन के द्वारा समस्याओं को रचनात्मक तरीके सुलझाने की योग्यता का बालकों में विकास।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में कला ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति की जानकारी विद्यार्थियों को देना ।
- वैयक्तिक आवश्यकताओं की पूर्ति और आनन्द - अनुभूति के लिए विद्यार्थियों में समझ विकसित करना ।
- पर्यावरण में व्याप्त दृष्टि सम्बन्धी विशिष्टता सम्बन्धी तथ्यों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक और संवेदनशील बनाना ।
- कला के निर्माण, कला को देखने और कला के प्रति प्रतिक्रिया के लिए बालकों को सक्षम बनाना ।
- विद्यार्थी विभिन्न कलाओं के अन्तर्सम्बन्ध को बता सकेगा ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष —

कलाएं अनेक तरीकों से जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करती हैं। वे बच्चे की शिक्षा की शुरुआत से व्यस्क होने और कैरियर के समय तक व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक सफलता दोनों को ही बेहतर बनाती है कला सार्विक भाषा है जिसमें कि समस्त लोगों को एकजुट करने की क्षमता होती है। नृत्य, गायन, वादन, नाटक मंचन, कला प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन कर विद्यालय शिक्षा के अभिप्र लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

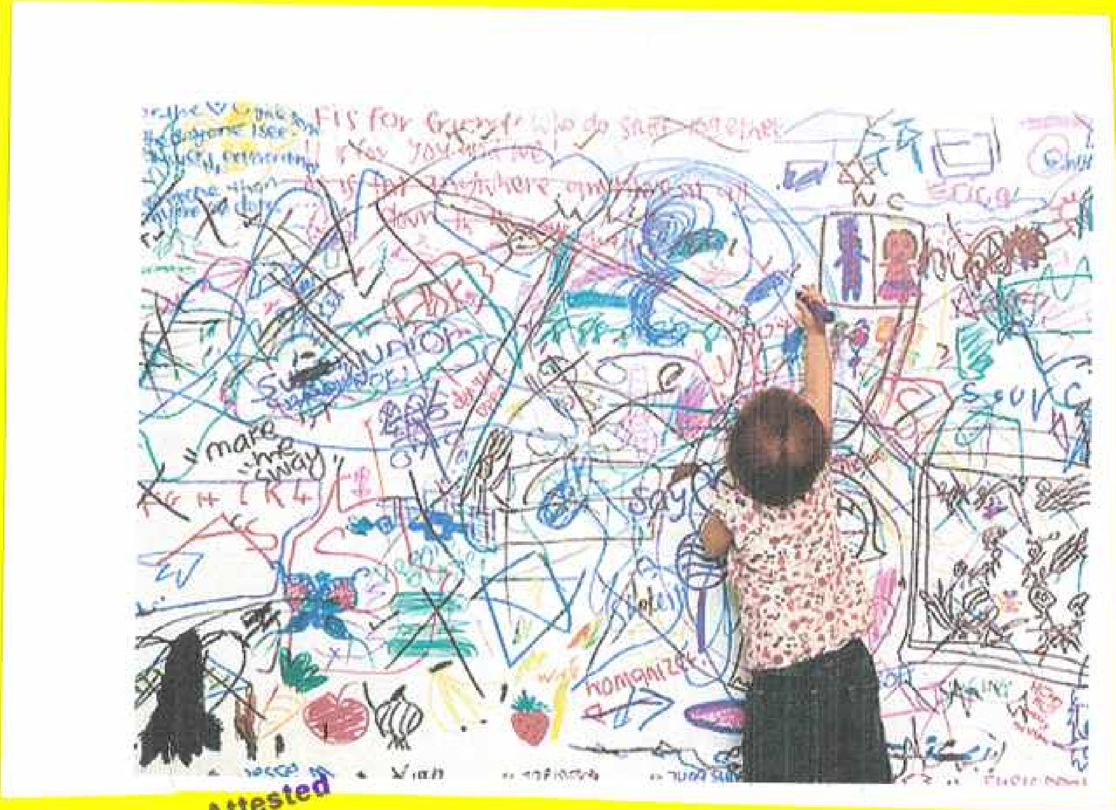

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बाल कला

बाल कला बच्चों द्वारा बनाई गई ड्राइंग, पेंटिंग और अन्य कलात्मक कार्य है। इसे "बच्चों की कला" या "बच्चों की कला" के रूप में भी जाना जाता है। बच्चों की कला बाल विकास और मनोवैज्ञानिक मुद्दों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकती है।

"बाल कला" का तीसरा अर्थ बच्चों द्वारा देखने के लिए कला अर्थ है, किशोर पाठकों के लिए एक पुस्तक में चित्र कहते हैं। इस तरह की कला बच्चे या पेशेवर वयस्क चित्रकार द्वारा की जा सकती है।

जैसे - जैसे बच्चा विकसित होता है, उनकी कला कई चरणों से गुजरती है। बच्चों के द्वारा कला के क्षेत्र में जो योगदान दिया जाता है उसे बालकला कहते हैं। माँ के गर्भ से ही आरम्भ हो जाती है। लेकिन जन्म के समय असहाय अवस्था में रहता है। वह दूसरों पर निर्भर रहता है। बाद में धीरे - धीरे वही बालक बड़ा होने लगता है और अपने आँखो से जो देखता है और कानों से सुनता है धीरे - धीरे सीखने लगता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

a.

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बाल कला के विभिन्न स्तर

बाल कला के विभिन्न स्तर होते है एक बच्चे में कला की समझ किस तरह से होती है ? इस प्रश्न का उत्तर हमें इनके विभिन्न स्तरो से पता चल जाएगा सुन्दरता या सृजन ही कला है जब बालक किसी सुन्दर दृश्य या वस्तु को देखकर सुन्दर वस्तु का निर्माण करते है जैसे - चित्र, पेंटिंग मूर्ति का निर्माण करते है तो यह कला ही कहलाता है।

बाल कला को हम विभिन्न स्तरो से समझ सकते है -

- दृश्य कला —

बच्चा धीरे - धीरे सीखता है चित्रांकन और पेंसिल से की गयी प्रथम गतिविधि है 'घिसना'। वह प्रथम गतिविधि है जो बच्चे करते हैं। यह उनके गति कौशल परिणामों का उत्कृष्ट प्रदर्शन है और यह उनकी प्रथम श्रेष्ठकृति है यह वर्ष के पहले के बच्चों में देखी जा सकती है।

- अमूर्त आकृति —

तीन वर्ष की उम्र के आसपास से बच्चा

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

से सामान्य चित्र बनाने के लिए वृतों एवं रेखाओं को जोड़ना शुरू कर देता है।

हम अवलोकन करते है कि बच्चे बिना शरीर के एक सिर बनाते है और भुजाओं को सीधे सिर से निकाल देते हैं। आँखे प्रायः अधिकांश चेहरे को देखते हुए बड़ी खींच जाती है तथा पैर भुला दिये जाते हैं।

• प्रतीकवाद –

अब पाँच वर्ष की उम्र के करीब वे चित्रों की एक शब्दावली सृजित कर लेते हैं। एक बच्चा एक घर, एक बिल्ली, एक कुत्ता या एक पक्षी का चित्र खींच सकता है। समान मूल चित्रों को खींचना जो कि रूपान्तरित की जा सकती है।

प्रत्येक बच्चा अपने स्वयं के अद्वितीय प्रतीकों का एक समुच्चय विकसित करता है जो कि अवलोकन के बजाय उसकी समझ के आधार पर खींचा गया होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri(Mandar, Ranchi

• यथार्थवाद –

बच्चे जैसे बढ़ते हैं वे अपने प्रतीकों को

F1

सीमायें दूटना शुरू कर देते हैं। बच्चा संपतर विस्तृत विवरण खोजता है।

लगभग आठ वर्ष की आयु से लेकर बारह वर्ष की आयु में विकास पूरा होने तक बच्चे यथार्थवादी अनुपात और तीन आयामी स्थान के प्रतिनिधित्व औपचारिक कलात्मक प्रशिक्षण से बच्चे को सबसे अधिक लाभ हो सकता है। स्टोरी-टेलिंग भी अधिक परिष्कृत हो जाती है।

- निष्पादन कला –

बच्चे अपनी माँ की लोरी पर प्रतिक्रिया करते हैं या जन्म से ही चुकते है। जैसे वे बड़े होते हैं वे आवाज को सुनते है और प्रतिक्रिया करते हैं बच्चा मानव या प्रकृति की आवाज के प्रति नितान्त ग्रहणशील होता है। मैंने बच्चों को खुशी से खिड़की की ओर दौड़ते हुए देखा उस समय बारिश की टिप-टिप की आवाज को सुनते हैं और वे मिट्टी के गंध को पार करते है। कला अनुभूतियां मस्तिष्क के भाषिक अंगो को सक्रिय और विकसित करती है जो कि बच्चा में बहुआयामी समझ को बढ़ाता है खेल-खेल पद्धति में नाटक उन्हें अधिक शामिल करता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

• चिकित्सीय —

बच्चों को उनके संवेगों से लेकर जोड़ने और विकसित करने के लिए कला चिकित्सा एक प्रभावशाली तरीका हो सकता है।

- यह भी पाया जाता है कि चित्रकला ऑटिज्म (Autism) से ग्रस्त बच्चों की अनुभूतियों को व्यक्त करने में सहायता कर सकता है जिसे वे अन्य तरीकों से व्यक्त करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।

- इसी प्रकार जिन बच्चों ने डर जैसे सदमे का सामना किया है उन्हें अपने प्रत्यक्ष अनुभवों को व्यक्त करने में कठिनाई होती है किन्तु कला के माध्यम से वेदना को आसानी से व्यक्त किया जा सकता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष —

बाल कला बच्चों द्वारा बनाई गई ड्राइंग, पेंटिंग और अन्य कलात्मक कार्य है। इसे "बच्चों की कला" या बच्चों की कला के रूप में भी जाना जाता है। बच्चों द्वारा देखने के लिए बनाई गई कला का अर्थ है, किशोर पाठकों के लिए एक पुस्तक में चित्र। ऐसी कला बच्चे या पेशेवर वयस्क चित्रकार द्वारा की जा सकती है। बाल कला इन स्थितियों में बच्चों को अपनी भावनाओं के साथ आने में मदद कर सकती है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi